प्रियतम

कौन सुनाता राग रागिनी,
किसने सुंदर गीत सुनाये ।
प्यासे प्रियतम नयनों में,
आशाओं के क्यों दीप जलाये ।।

नहीं सुनेगी प्रियतम कविता,
नहीं रागिनी सुन सकती ।
आज अंधेरे पलक द्वार को,
आश्वासन नहीं दे सकती ।।

क्यों तुम व्यर्थ उपाय सुझाते,
क्यों पत्थर को पिघलाते ।
नहीं चाहिए जिसको जीवन,
क्यों जीवन की राह दिखाते ।।

हरले प्यार और पीड़ा को,
अगर बता दो उस पथ तक को ।
नव ज्योति के पुंज साथ ले,
नहीं जिला सकते प्रियतम को ।।

अनिल कुमार लोहानी, वैज्ञानिक "बी", गंगा मैदानी क्षेत्रीय केन्द्र, पटना